के दूसरे तीसरे एवं छठे समुल्लास के सरलीकृत एवं संक्षिप्त संस्करण प्रकाशित किये। इसी प्रकार उन्होंने 'व्यवहार भानु' के सरलीकृत संस्करण का प्रकाशन किया। इन तीनों पत्रिकाओं का प्रकाशन इस आशा से किया गया है कि स्वामी जी के विचार घर-घर तक पहुँचें।

मुझे यह कहते हुए भी प्रसन्नता हो रही है कि पद्मश्री विनयचन्द्र मौदगिल्य, प्राचार्य गन्धर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली, जिनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल में हुई थी, ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को संगीत शिक्षा की ओर प्रेरित करने हेतु अपनी अमूल्य सेवायें प्रदान की हैं। इस शृंखला में उन्होंने पिछले दिनों तीन दिन तक गुरुकुल में प्रवास किया तथा चुने हुये ब्रह्मचारियों को सस्वर वेदमन्त्र एवं अन्य गीत सिखाये।

मुझे आपको यह सूचना देते हुए हर्ष हो रहा है कि पिछले दिनों इस विश्वविद्यालय में अमेरिकन अध्ययन के अखिल भारतीय संगठन का १८ वाँ वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर उ०प्र० के पर्यटन मन्त्री श्री गुलाब सेहरा ने अपने सन्देश में कहा कि ऐसी संस्थाओं ने देश विदेश में एकात्मकता प्रतिष्ठित करने में लाभदायक भूमिका निभाई है। अवध विश्वविद्यालय के कुलपति श्री मेहरोत्रा ने कहा कि इस प्रकार के सम्मेलनों से गुरुकुल कांगड़ी की छवि निखरेगी। इस सम्मेलन का उद्घाटन हमारे मान्य परिद्रष्टा डा० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार ने अपने ओजस्वी भाषण से किया। उन्होंने कहा कि किपलिंग तो कहता था, पूर्व पश्चिम का संगम सर्वथा असम्भव है। मैं भारतीय किपलिंग कहता हूं पूर्व और पश्चिम अभिन्न हैं और सदा ही एक दूसरे से जुड़े रहेंगे।

देवियों तथा सज्जनों !

आप जानते ही हैं कि गुरुकुल का मातृ-ग्राम काँगड़ी ग्राम है। इस विश्वविद्यालय द्वारा इस गाँव को पूर्ण रूप से अंगीकृत कर लिया गया है। २६ दिसम्बर १९८३ को लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ का इस गाँव में पदार्पण हुआ तथा वे इस गाँव की प्रगति से काफी प्रभावित हुये। स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, ज्वालापुर ने ग्रामवासियों को कुटीर उद्योग धन्धों के लिए ऋण देने का व्यापक कार्यक्रम शुरू किया है जिससे यहाँ के निवासियों की आर्थिक स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ है।

गत वर्ष श्रद्धानन्द सप्ताह के दौरान डा० बी०डी० जोशी के निर्देशन में पुण्य भूमि में राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत कैम्प लगाया गया, विश्वविद्यालय के ५० छात्रों ने अत्यन्त लगन और निष्ठा से काँगड़ी ग्राम में कार्य किया।

अन्य विशिष्ट अतिथिगण के अलावा माननीय बलराम जाखड, श्री आर० वैंकटनारायण, कृषि उत्पादन आयुक्त उत्तर प्रदेश, श्री दर्शन सिंह जिलाधीश, बिजनौर ने कैम्प का अवलोकन किया। इसका उद्घाटन भारत सरकार के भू०पू० सलाहकार श्री शाह ने किया था।

माध्यम से शिक्षा–दीक्षा प्राप्त करें और फिर कार्यरत हों, तो आर्य जगत् को भी गुरुकुल पर भरोसा होगा।

बहुत दिनों से मेरी कल्पना रही है कि उच्चस्तरीय अनुसन्धान या शोधपत्रिका आर्यजगत् की भी होनी चाहिये। होशियारपुर से एक पत्रिका निकलती है। आपके गुरुकुल से वैदिक मैगजीन निकालता था, एक वैदिक पाथ निकलता है। ये पत्रिकायें आज की दृष्टि से स्तरीय या मानक नहीं हैं। यदि इन पत्रिकाओं का जीवन क्षणिक है, तो ये यशस्वी नहीं हो सकती। मैं स्वयं प्रयाग के विज्ञान परिषद् से विज्ञान शोध सम्बन्धी एक पत्रिका ('विज्ञान परिषद् अनुसन्धान पत्रिका') लगभग २७ वर्ष से निकाल रहा हूँ–यह हिन्दी भाषा की एक मात्र अधिकृत शोध पत्रिका है। यदि गुरुकुल को ऐसी पत्रिका निकालनी है। तो गुरुकुल के पास कम से कम ५ लाख रुपये की एक स्थायी निधि होनी चाहिये। इतनी धनराशि से पचास– साठ हजार रुपया वार्षिक ब्याज आवेगा। तब आश्वस्त होकर उसके ब्याज से त्रैमासिक उच्चस्तरीय पत्रिका निकाली जा सकेगी। आज अनेक विश्व–विद्यालयों ने दयानन्द पीठ की स्थापना की है। इनकी संख्या बढ़ती जायेगी। बिना स्तरीय शोध पत्रिका के इन पीठों का काम भी अधूरा रहेगा। क्या आर्यसमाज के क्षेत्र में गुरुकुलों में निष्ठा रखने वाले ५–१० धनी मानी ऐसे व्यक्ति नहीं मिल सकते जो इस काम के लिए एक–एक लाख रुपया दे दें? शोध संस्थान खोलने की बात मैने कलकत्ता में भी सुनी, बम्बई में भी दिल्ली में भी अजमेर में भी। शोध संस्थान का नाम तो लोगों ने सुना है, किन्तु शोध कार्य के लिये शोधकर्ता को जो शोध स्वतन्त्रता चाहिये, उसे कोई देने को तैयार नहीं है। हमारा समाज भी रूढ़ियों से बंधा हुआ है। शोधकर्ता अपने क्षेत्र में कल्पना की मुक्त उड़ान लेता है। दूसरों को भी उसकी प्रत्यालोचना करने का अधिकार है, पर विचारों के स्वातंत्र्य और उनके प्रकाशन में कोई बाधा नहीं डाल सकता। आपका गुरुकुल संस्थान इस कार्य को उदारता से प्रारम्भ करे तो बहुत अच्छा होगा। आप नहीं करेंगे तो कोई करेगा ही। सम्भवतया यूनिवर्सिटी वालों को करना पड़े। गुरुकुलों और यूनिवर्सिटियों में अब निकट का सम्पर्क बढ़ाना चाहिए।

स्वतन्त्रता के बाद हमारे सम्मुख विगत कई वर्षों से दुःखद कहानियाँ भी आयीं। उत्तर भारत में यह विषाक्तता तेजी से फैली। हमारी समस्त शिक्षा - संस्थायें इसके कलुषित प्रभाव से ग्रस्त हो गयीं। अभी यह प्रभाव मिटा नहीं है। विद्यार्थियों में यह विष ऐसा फैला कि उनके लिए अभि–शाप बन गया। इसमें सबसे अधिक हानि युवकों और छात्रों की हुई। ये संयम खो बैठे, दूसरों ने अपने स्वार्थ के लिए उन्हें मूर्ख बनाया। आज गुरुकुल भी उस प्रभाव से बच न पाया। मैं अनैतिक तत्त्वों की बात नहीं करना चाहता, जिन्होंने यह स्थिति पैदा कर दी गुरुकुल को प्रतिष्ठा की हानि हुई है, और विश्वविद्यालयों की भी।

सुखवादी दार्शनिक मिल, बेन्थम, स्पेंशर आदि हैं। परन्तु ये नैतिक सुखवाद को मानते हैं। इनका कहना है कि—जैसे मैं सुखी होना चाहता हूँ, इसी प्रकार दूसरे प्राणी भी सुख चाहते हैं इसलिये मुझे भी और को दुःख नहीं देना चाहिये क्योंकि मैं भी दुःखी नहीं होना चाहता। इस प्रकार पाश्चात्य दर्शन में मनोविज्ञान नैतिक सुखवाद का प्रादुर्भाव होता है। इससे पूर्व तो स्वार्थ सुखवादी दार्शनिक दूसरों के सुख की उपेक्षा करते थे। उनका नीति सम्बन्धी सिद्धान्त चार्वाक के समान है। चार्वाक का कहना है कि विषयजन्य जो सुख हैं वही हमारा अन्तिम उद्देश्य है। वह कहता है कि जब तक जिओ सुख से जिओ चाहे ऋण भी क्यों न लेना पड़े।[1] यही विचारधारा स्वार्थ सुखवादी पाश्चात्य दार्शनिकों की थी इस प्रकार पाश्चात्य नीतिशास्त्र में प्रकृतिवाद अर्थात् व्यवहार वाद, अन्तःप्रज्ञावाद, सुखवाद, विकासवाद अर्थात् पूर्णतावाद आदि वादों का प्रचलन हुआ। विकास वाद के अनुसार सर्वाङ्गीण, विकास ही मनुष्य का उद्देश्य है। इसमें हेगल एलक्जेन्डर, स्पेंशर, हर्बर्ट, ग्रीन और डारविन आदि का नाम लिया जा सकता है। इनमें हेगल अध्यात्मवादी विकासवादी है। आगे चलकर अरविन्द पर इसका प्रभाव पड़ा।

नीतिशास्त्र का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त बुद्धिवाद है। इस विषय में स्पिनोजा का कहना है कि नीतिशास्त्र एक सोद्देश्यपूर्ण शास्त्र है। अर्थात् मनुष्य का सम्बन्ध जहाँ प्रकृति के साथ है वहाँ समाज के साथ भी है। मनुष्य को अपना उद्देश्य बनाना चाहिये कि वह प्रकृति और समाज के साथ सन्तुलन बना सके। उसे चाहिये कि वह ज्ञानमार्ग की सीढ़ियों द्वारा और शरीर के सन्तुलन को मन के साथ रखता हुआ मौक्तिका ज्ञान को प्राप्त कर लेवे।

बटलर का कहना है कि हमें अन्तर्मुखी और बाह्य निरीक्षण द्वारा यह पता लगता है कि नैतिक ज्ञान सहज ज्ञान है। मनुष्य के अन्दर परोपकार, दया, सहानुभूति आदि जन्मजात हैं। वह कहना है कि हमारी अन्तर्बोध की शिक्षायें स्वयं भगवान् की शिक्षायें हैं इस अन्तर्बोध के सिद्धान्त को मानकार बटलर ने स्वार्थवाद का खण्डन किया है। इस प्रकार पाश्चात्य दार्शनिक भौतिकवाद से चलकर अध्यात्मवाद की ओर प्रवेश करते हैं।

अब प्रश्न यह होता है कि नैतिकता के सिद्धान्त कैसे बनते हैं? उनका मापदण्ड क्या हो? कुछ लोग परम्परा, रीतिरिवाज को ही नैतिकता मानते हैं। जिसमें परोपकार की भावना से कृत कार्य नैतिक माना जाता है। कुछ अन्य दार्शनिक एक लक्ष्य को सामने रख कर नैतिकता का निर्णय देते हैं। जैसे सुखवादी चार्वाक आदि हैं। कुछ लोग निरपेक्ष सिद्धान्त के रूप में नैतिकता को मानते हैं, जैसे–कान्ट।

---

१ "यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।"